ओडिशा का अनोखा चार दिवसीय रज–पर्व का पहला दिवस

ओडिशा भगवान जगन्नाथ का देश माना जाता है जिसके इष्टदेव,गृहदेव,ग्रामदेव,राज्यदेव स्वयं जगन्नाथ भगवान हैं।इसीलिए ओडिशा प्रदेश की समस्त कलाओं,परम्पराओं तथा ओडिया संस्कृति के प्राण माने जाते हैं भगवान जगन्नाथजी । ओडिशा में 12 महीनों में 13 पर्व मनाने का प्रचलन है जिनमें सबसे अनोखा पर्व रज–पर्व है जिसके मनाने की प्रथा बहुत ही सुदीर्घ है। पहले इसे दक्षिण ओडिशा में ही मनाया जाता था लेकिन आजकल पिछले छह–सात दशकों से पूरे ओडिशा में हर्षोल्लास के साथ मनाया जाने लगा है। कहते हैं कि एक वर्ष में कुल 12 महीनों की 12 संक्रांति होती है जिनमें पवित्र स्नान,पूजा–पाठ,दान–दक्षिणा आदि का लौकिक तथा सामाजिक महत्त्व है लेकिन जून मास की संक्रांति को जिसे मिथुन संक्रांति कहते हैं उसके आगमन से सौरमण्डल तथा प्रकृति में बदलाव आ जाता है। ग्रीष्म के बाद वर्षा ऋतु का आगमन हो जाता है। जिस प्रकार औरतों का प्रतिमास मासिक धर्म होता है जो उनके शरीर के विकास का प्रतीक होता है ठीक उसीप्रकार जून माह के मिथुन संक्रांति के दिन भगवान सूर्यदेव की पूजा का विशेष महत्त्व

ओडिशा में है। कहते हैं उससे भावी लोक जीवन में शांति आती है।

रज–पर्व कुल चार दिनों का पर्व होता है। 2020 के रज –पर्व का आरंभ 13जून से हुआ जो 15जून तक चलेगा जिसे पहली,दूसरी,तीसरी तथा चौथी रज कहा जाता है। पहली रज पर्व के दिन घर की बालिकाएं,युवतियां ,महिलाएं तथा बुजुर्ग महिलाएं एकसाथ मिलकर मौज–मस्ती कीं। नाच–गान कीं। लुड्डो जैसे अनेक प्रकार के मनोरंजक खेल खेलीं। पान खाईं तथा झूला झूलीं। ओडिशा में रज–पर्व में अविवाहिताएं भी बढ़चढ़कर हिस्सा लेती नजर आईं। वे परम्परागत साड़ी पहनीं थीं। अपने हाथों में मेंहदी लगाई थीं। कहते हैं कि धरती जिसप्रकार वर्षा के लिए अपने को तैयार करती है ठीक उसी प्रकार आज पहली रज पर अविवाहिताएं भी अपने आपको तैयार कीं थीं। वे भगवान जगन्नाथ से अपने भावी सुखमय जीवन की प्रार्थना कीं। शुरु के तीन दिन महिलाएं बिना पका हुआ भोजन करेंगीं। नमक तक नहीं लेंगीं। साथ ही साथ तीन दिनों तक अपने पैरों में चप्पल भी नहीं पहनेंगीं। इन तीन दिनों तक महिलाएं कुछ काट–छिल भी नहीं करेंगीं। न धरती की किसी तरह से खुदाई करेंगीं। रज–पर्व के पहले दिन 13जून को महिलाएं तथा बालिकाएं सुबह में

उठकर अपने शरीर में हल्दी–चंदन का लेप लगाईं । पवित्र स्नान कीं। पूजा–पाठ कीं । आज से लेकर वे अगले तीन दिनों तक मौसमी फलों तथा ओडिया परम्परागत भोजन पूड़ा–पीठा आदि ही खाएंगीं। इस वर्ष कोरोना संक्रमण के चलते रज–पर्व सामूहिक रुप में नहीं मनाया जा रहा है लेकिन मिली जानकारी के अनुसार आज ओडिशा के घर–घर में रज–पर्व मनाया गया। घर की बालिकाओं में नया उत्साह देखने को मिला। वे अपने एपार्टमेंट की बालकोनी में झूला भी झूलीं। इसप्रकार रज–पर्व का पहला दिवस हरप्रकार से यादगार रहा। अशोक पाण्डेय